P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-1) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

21वीं शदी में दक्षिण एशिया विशेषकर भारत–पाकिस्तान के प्रति अमेरिका और रूस की नीति

रामकृष्ण सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,
श्री गणेश राय (पी0जी0) कालेज,
डोभी, जौनपुर।

सारांश

प्रस्तुत लेख में 21 शदी में दक्षिण एशिया विशेषकर भारत–पाकिस्तान के प्रति अमेरिका और रूस की नीति को विश्लेषित किया गया है। प्रस्तुत लेख को मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया गया है। लेख के प्रथम भाग में दक्षिण एशिया में भारत–पाकिस्तान के परिप्रेक्ष्य में अमेरिका, रूस के दृष्टिकोण को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। द्वितीय भाग में भारत के प्रति अमेरिका नीति में आये बदलाव को विश्लेषित किया गया, तृतीय भाग में पाकिस्तान के प्रति रूस की नीति में आये बदलाव को विश्लेषित किया गया है और चतुर्थ भाग में रूस की भारत के प्रति नीति की निरन्तरता एवं मित्रता को नये परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है। दक्षिण एशिया विशेषकर भारत–पाकिस्तान के प्रति अमेरिका और रूस की नीति को इस क्षेत्र में क्या प्रभाव पड़ेगा उसको स्पष्ट करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : सामरिक चतुर्भुज, शीतयुद्ध, शक्ति–सन्तुलन, राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय सुरक्षा।

प्रस्तावना

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत–पाकिस्तान के सम्बन्ध बहुत कटु रहे हैं। यही कारण है कि भारत और पाकिस्तान के बीच 1947–48 में युद्ध हुआ और इसके बाद पुनः इसकी पुनरावृत्ति 1965 व 1971 के युद्ध में दिखाई दिया, लेकिन रूस ने हमेशा विषम परिस्थितियों में भारत का साथ दिया। विश्व में दो देशों की मित्रता के कई उदाहरण है, जैसे अमेरिका–पाकिस्तान, चीन एवं पाकिस्तान जहाँ इन देशों की मित्रता में समानता, सद्भाव का भाव न होकर स्वामी एवं याचक का भाव दिखाई देता है वहीं रूस और भारत के बीच जो सम्बन्ध थे उसका आधार समानता एवं निस्वार्थ का था। सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस, सोवियत संघ के उत्तराधिकारी के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वैश्विक मंच पर अवतरित हुआ। शीतयुद्ध के पश्चात् उदारीकरण एवं भूमण्डलीकरण के युग का सूत्रपात हुआ ऐसी परिस्थिति में रूस की विदेशनीति में कुछ परिवर्तन आये, पाकिस्तान के प्रति रूस के दृष्टिकोण में नरमी आई यद्यपि आज भी रूस भारत का एक विश्वसनीय मित्र बना हुआ है।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत लेख में दक्षिण एशिया विशेषकर भारत एवं पाकिस्तान के प्रति अमेरिका व रूस की नीति में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है उसका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। अमेरिका एवं चीन निरन्तर इस क्षेत्र में अपनी सशक्त भूमिका निभाने के लिए तत्पर है ऐसी स्थिति में इस क्षेत्र में रूस के भी अपने दीर्घकालिक उद्देश्य एवं लक्ष्य हैं, जिसको प्राप्त करने के लिए रूस सदैव तत्पर दिखाई दे रहा है। दक्षिण एशिया विशेषकर भारत और पाकिस्तान के परिप्रेक्ष्य में रूस अपने व्यापारिक, आर्थिक एवं सैन्य हितों को साधनें का प्रयास कर रहा है, जहाँ भारत के चीन और अमेरिका के साथ व्यापारिक एवं आर्थिक हित निरन्तर प्रगाढ़ होते जा रहे हैं वहीं अमेरिका के लिए पाकिस्तान का वह महत्व नहीं है जो पहले था। शीतयुद्ध के पहले पाकिस्तान अपने सैनिक आवश्यकता की पूर्ति अधिक से अधिक अमेरिका एवं चीन के सहयोग से पूरा करता था लेकिन दक्षिण एशिया और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आये बदलावों के कारण रूस पाकिस्तान से रक्षा सहयोग बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। यह भारत के लिए चिन्ता का विषय है, इसी परिप्रेक्ष्य में रूस की नीति का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने का प्रयास किया जायेगा।

भारत–पाकिस्तान के प्रति अमेरिका और रूस की नीति

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत का नेपाल एवं भूटान के बाद यदि कोई सच्चा मित्र रहा है तो वह पूर्व सोवियत संघ ही था। अपवाद के रूप में

भारत–चीन युद्ध 1962 को छोड़ दियाजाय तो रूस ने हमेशा विषम परिस्थितियों में भारत का साथ दिया है। 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में जब अमेरिका ने अपने इण्टरप्राइजेज तथा त्रिपोली नामक विमान वाहक युद्धपोत को बंगाल की खाड़ी में उतारा तो रूस ने प्रतिउत्तर में न केवल अपने युद्धपोत और परमाणु पनडुब्बी भारत की सुरक्षा के लिए तैनात की वरन् अमेरिका और चीन को भी यह चेतावनी दी की यदि वह भारत के खिलाफ मोर्चा खोलेगा तो उसे रूस की तरफ से करारा जवाब मिलेगा। इस प्रकार रूस ने पाकिस्तान, अमेरिका, ब्रिटेन और चीन के सामरिक चतुर्भुज को विफल कर दिया और भारत की प्रतिष्ठा को बचाने में मद्द की। परन्तु इधर कुछ वर्षों से रूस की पाकिस्तान के प्रति नीति में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। भारत–पाकिस्तान के बीच विद्यमान सैन्य तनाव के दौरान रूस द्वारा पाकिस्तान के साथ सैन्य अभ्यास करना भारत सुरक्षा चिंतको, नागरिकों, राजनीतिज्ञों व कूटनीतिज्ञों और विदेश मामलों के विशेषज्ञों के लिए चिंता का विषय है। जहाँ भारत–रूस के सम्बन्धों की बात है, वह हमेशा भारत का विश्वसनीय मित्र रहा है।

अमेरिका और पाकिस्तान के बीच तनाव निरन्तर बढ़ रहा है, इसी कारण अमेरिका ने 2018 के अन्त में पाकिस्तान के साथ सैन्य अभ्यास करने से मना कर दिया। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ने भी यह स्वीकार किया गया है कि पाकिस्तान ने अमेरिका के साथ रक्षा एवं खुफीया सहयोग को बन्द कर दिया है। अमेरिका और पाकिस्तान के बीच विगत एक वर्ष से अधिक समय से रणनीतिक बातचीत रूकी हुई है। 2018 में अमेरिका ने पाकिस्तान को 25.5 करोड़ डॉलर की सैन्य सहायता इस शर्त पर दी है कि यह सहयोग तभी मिलेगा जब पाकिस्तान अपने आतंकी संगठनों पर कार्यवाही करेंगा। यह सर्वविदित है कि पाकिस्तान निरन्तर आंतकी संगठनों की सहायता कर रहा है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान को अमेरिका से सहायता प्राप्त करना लगभग असंभव है। अमेरिका पाकिस्तान को आतंकवाद पर नियत्रण लगाने के लिए दबाव डाल रहा है लेकिन पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है।

भारत के प्रति अमेरिका की नीति

सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने अपने व्यापक दीर्घकालिक व्यापारिक, आर्थिक एवं सैनिक हितों को ध्यान में रखकर एकमात्र महाशक्ति अमेरिका से सम्बन्ध प्रगाढ़ करना प्रारम्भ कर दिया, ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि सोवियत संघ का उत्तराधिकारी रूस अब आर्थिक रूप से उतना मजबूत नहीं रह गया। भारत में आर्थिक उदारीकरण लागू होने के बाद अधिक–अधिक से आर्थिक लाभ उठाने के लिए अन्य देशों के साथ व्यापारिक एवं आर्थिक सम्बन्ध बनाना आवश्यक हो गया, उसमें संयुक्त राज्य अमेरिका बदलते वैश्विक समीकरण में भारत के लिए सबसे बेहतर विकल्प साबित हुआ। सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस में व्यापक राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन की सम्भावना थी, ऐसी स्थिति में रूस की भविष्य में क्या नीति होगी उसका आकलन करना भारत के लिए मुश्किल था। ऐसी स्थिति में अमेरिका वैश्विक राजनीति में भारतीय हितों को पूरा करने के लिए बेहतर विकल्प था। भारत की विशाल जनसंख्या जहाँ अमेरिका के लिए एक बहुत बड़ा बाजार थी जिसमें व्यापार की अनन्त सम्भावनाएँ थी। पूर्व में जहाँ अमेरिका भारत एवं रूस की मित्रता से संशकिंत रहता था, परिवर्तित अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वह शंका समाप्त हो गयी। ऐसी स्थिति में भारत और अमेरिका में निकटता का वातावरण तैयार हो गया और दोनों देशों के सम्बन्ध प्रगाढ़ होते गये। 1998 में जब भारत ने अपना परमाणु परीक्षण तो कुछ समय के लिए अमेरिका ने भारत पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस समय दोनों के बीच सम्बन्ध कुछ कटु हो गये, लेकिन 1999 में जब कारगिल संघर्ष शुरू हुआ तो अमेरिका ने भारत का पक्ष लिया और पाकिस्तान को पीछे हटने के लिए विवश किया। इसके बाद भारत और अमेरिका के बीच सम्बन्ध निरन्तर प्रगाढ़ होते गये। भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के बीच परस्पर विश्वास एवं सहयोग के रूप में ऐतिहासिक नागरिक परमाणु समझौता हुआ, जिससे पाकिस्तान के सापेक्ष अमेरिका और भारतीय सम्बन्धों के एक नए अध्याय की शुरूआत हुई। इस समझौते में जहाँ पाकिस्तान और अमेरिका के सम्बन्ध और कटु हुए, वहीं भारत–अमेरिका के सम्बन्धों में मजबूती आई।

2014 में भारतीय राजनीति में परिवर्तन हुआ और नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एन0डी0ए0 को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ और भारतीय प्रधानमंत्री के पद पर नरेन्द्र मोदी ने सत्ता की बागडोर सम्भाली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में निदेशनीति की संचालन प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन आया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा के सम्बन्ध अब व्यापारिक दायरे से बाहर निकालकर व्यक्तिगत मित्रता में बदल गये जिसका परिणाम यह हुआ कि बाद में भारत–अमेरिका के बीच विभिन्न व्यापारिक, आर्थिक एवं सैन्य सहयोग के समझौते हुए। बाद में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने भी इस सम्बन्ध को और मजबूत आधार प्रदान करने का प्रयास किया।

भारत तथा अमेरिका कूटनीतिक सम्बन्ध निरन्तर और अधिक मजबूत हो रहे है। वैश्विक एवं क्षेत्रीय राजनीति का वर्तमान स्थिति में दोनों देश एक दूसरे के निकट आ रहे है। जहाँ दो दशकों में पाकिस्तान और अमेरिका एक दूसरे को लेकर संशकित है, वही भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक, व्यापारिक एवं सामरिक सहयोग लगातार बढ़ रहा है। भारत और अमेरिका के बीच 2017 का वर्ष अति महत्वपूर्ण रहा, दोनों देशों ने इस वर्ष हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में सहयोग और आंतकी खतरों से मुकाबला करने के लिए अपनी प्रतिरक्षा और सुरक्षा सम्बन्धों को मजबूत करने का प्रयास किया है। जिससे दोनों देशों के बीच परस्पर विश्वास बढ़ा है। 2018 में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति को जारी किया, जिसमें उन्होंने भारत को महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति बताया, वही वर्ष 2017 भारत और अमेरिका के लिए महत्वपूर्ण रहा। अमेरिका ने कहा भारत और अमेरिका विश्व में शान्ति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करेंगे। अमेरिका ने 2018 में अपनी प्रतिनिधी सभा में 621.5 अरब डॉलर का रक्षा व्यापार विधेयक प्रारित किया, जिसने भारत के साथ सहयोग

बढ़ाने जाने का प्रस्ताव है। अमेरिका ने कहा कि ''अमेरिका और भारत के बीच सहयोग से हमारी सुरक्षा और 21वीं शदी में सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने में हमारी क्षमता में और वृद्धि होगी।''

पाकिस्तान के प्रति रूस की नीति

भारत और अमेरिका के बीच बढ़ते सैन्य सहयोग से रूस का चितिंत होना स्वाभाविक है। रूस की चिंता उचित ही है क्योंकि भारत–रूस के बीच चल रहे सैन्य रक्षा उद्योगों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ने की सम्भावना बढ़ गयी। ऐसी स्थिति में रूस ने अपने विकल्पों की तलाश की, ऐसे में पाकिस्तान रूस के लिए दक्षिण एशिया में सैन्य सहयोग के लिए सबसे अच्छा विकल्प था। रूस ने अमेरिका और भारत को सन्तुलित करने के लिए पाकिस्तान से सैन्य सहयोग की दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय लिया, फिर पाकिस्तान एवं रूस ने सैन्य अभ्यास करने का निर्णय लिया। रूस और अमेरिका के बीच विद्यमान दूरी का फायदा उठाकर पाकिस्तान जहाँ अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम करना चाहता है। ऐसी स्थिति में अमेरिका एवं पाकिस्तान के बीच कटुता बढ़ती गयी वहीं दूसरी ओर अमेरिका और भारत के बीच सम्बन्ध बेहतर होते गये और वहीं दूसरी ओर भारत और रूस के बीच सम्बन्धों में दूरियाँ बढ़ती गयी। बदलते राजनीतिक समीकरण में पाकिस्तान एवं रूस निकट आते गये।

अमेरिका में चुनाव हुआ और ट्रम्प राष्ट्रपति बने। राष्ट्रपति बनने के पहले राष्ट्रपति ट्रम्प ने दक्षिण एशिया में पाकिस्तान को परमाणु हथियारों की वजह से विश्व का सबसे खतरनाक देश बताया। ट्रम्प ने यह विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में पाकिस्तान को नियन्त्रित करने का कार्य भारत ही कर सकता है क्योंकि भारत के पास भी परमाणु हथियार है और भारत जनसंख्या, क्षेत्रफल, संसाधनों और आर्थिक क्षमता में पाकिस्तान से शक्तिशाली है। भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक एवं सैन्य सहयोग से रूस को नये बाजार की तलाश थी वहीं दक्षिण एशिया में भारत–अमेरिका की मित्रता से अमेरिका का प्रभाव बढ़ने लगा और रूस का प्रभाव कम होने लगा। दक्षिण एशिया में अमेरिका के सापेक्ष शक्ति सन्तुलन स्थापित के लिए रूस का पाकिस्तान के निकट आना स्वाभाविक था। पाकिस्तान एवं रूस के बीच मधुर सम्बन्धों में एक कारक ग्वादर बन्दरगाह, यहाँ बनने वाला चीन और पाकिस्तान का आर्थिक गलियारा दक्षिण एशिया के सम्बन्ध में एक नया रास्ता खोलता है। ग्वादर बन्दरगाह पाकिस्तान के अलावा चीन, अफगानिस्तान, मध्य एशिया के देशों के प्रयोग में लाया जा सकता है जिससे भविष्य में पाकिस्तान एवं रूस को व्यापार में एक नई दिशा दे सकता है।

रूस 1914 में पाकिस्तान के विरूद्ध अपने हथियार प्रतिबन्ध को खत्म कर दिया। वही 2016 में दोनों देशों के बीच पहला सैन्य समझौता हुआ। जिसमें दोनों देशों ने एक साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास से सम्बन्धित समझौता किया। अक्टूबर 2015 में पाकिस्तान और रूस ने लाहौर से काराची तक 1100 किमी0 तक गैस पाइपलाइन के निर्माण के लिए 2.5 अरब डॉलर के समझौते पर हस्ताक्षर किया। इससे भारत की सुरक्षा चिन्ताएँ बढ़ गयी। अक्टूबर 2018 में रूस और पाकिस्तान की सेना ने उत्तरी पाकिस्तान में संयुक्त सैन्य अभ्यास किया। यह सैन्य अभ्यास 4 नम्बर 2018 तक जारी रहा। पाकिस्तान और रूस के बीच बढ़ती मित्रता को देखकर अमेरिका और भारत का चिन्तित होना स्वभाविक है। इस कारण से भारत और अमेरिका के बीच रक्षा व्यापार और हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में निरन्तर सहयोग बढ़ा है।

भारत के प्रति रूस की नीति में निरन्तरता

भारत और रूस के बीच विगत कुछ वर्षों से बेहतर सम्बन्ध बनाने के प्रयास हुए है लेकिन भारत और अमेरिका के सम्बन्धों में जो गर्माहट है वह रूस और भारत के सम्बन्धों में दिखाई नहीं देती है, यद्यपि बेहतर सम्बन्धों के प्रयास हुए है। भारत अपनी विदेशनीति में सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। नरेन्द्र मोदी और पुतिन ने गोवा में 2016 में कुल 16 समझौतों पर हस्ताक्षर किये। दोनों देशों रक्षा परमाणु शक्ति, अंतरिक्ष, ऊर्जा, जहाज निर्माण, साइबर सुरक्षा, परिवहन, आतंकवाद विरोधी सहयोग पर विचार किया। भारत एवं रूस के बीच यह समझौता एक पड़ाव मात्र है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने कार्यकाल में विश्व के कई देशों से अपने सम्बन्ध मजबूत किये, लेकिन वैश्विक राजनीति में सन्तुलन स्थापित करने के लिए अमेरिका से बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने का अधिक प्रयास किया, लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस सन्तुलन को स्थापित करने के प्रयास में रूस के महत्त्व को कम नहीं करना चाहिए, क्योंकि आजादी के बाद सोवियंत संघ ही हमारा सबसे विश्वसनीय मित्र रहा है, अब उसका उत्तराधिकारी रूस है, इसलिए रूस से बेहतर सम्बन्ध रखकर इस क्षेत्र में सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि एशिया में अगर रूस, चीन को उच्च सैन्य तकनीकी उपलब्ध करता है तो यह भारत की सुरक्षा के लिए सबसे चिन्ताजनक बात होगी। रूस एवं चीन के अच्छे सम्बन्धों के कारण आने वाले समय में रूस का पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध और बढ़ सकता है। रूस द्वारा पाकिस्तान को एम0आई0 तथा सुखोई जैसे लड़ाकू विमानों का प्रयोग भारत के विरूद्ध किये जाने की बहुत अधिक सम्भावना है। ऐसी स्थिति में भारत को रूस से वार्ता करनी चाहिए साथ ही साथ अपने व्यापारिक, आर्थिक और सैन्य सहयोग को आगे बढ़ाकर रूस की चिंता का निराकरण करना चाहिए। दोनों के बेहतर सम्बन्धों से दीर्घकालिक हितों की सुरक्षा सम्भव है, क्योंकि रूस ने सुरक्षा परिषद में चीन और अमेरिका से भारतीय हितों की रक्षा के लिए हमेशा टकराव मोल लिया है। आर्थिक एवं सैन्य सहयोग से रूस ने हमेशा भारत के विकास में योगदान दिया है जिसे भुला पाना सम्भव नहीं है।

अक्टूबर 2018 में 19वीं वार्षिक समिति में भारत रूस के बीच दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण मिशाइल–एस 400 जो जमीन से हवा में 400 किलोमीटर मार करने वाले मिशाइल है से सम्बन्धित समझौता हुआ। 24 महिने में भारत को रूस गगनयान मिशन तथा न्यूक्लियर क्षेत्र में सहयोग से सम्बन्धि समझौता हुआ। इसके अलावा मानव संसाधन विकास, गैस एवं प्राकृतिक ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग की भी बात हुई। भारत और पाकिस्तान के बीच

सम्बन्धों के तनातनी के बीच भारत ने रूस के साथ 10 वर्ष की अवधि के लिए आई0एन0एस0 चक्र परमाणु पनडुब्बी पट्टे पर लेने के लिए समझौता किया। रूस इस परमाणु पनडुब्बी को भारत को 2025 तक सौपेगा। इससे पहले 2012 में आई0एन0एस0 चक्र को दस वर्ष के लिए पट्टे पर लिया था। जिसकी अवधि 2022 में समाप्त हो रही है। भारत अपनी नौ सेना को सुरक्षात्मक आधार प्रदान करने के लिए समझौता किया। भारत और रूस के बीच यह समझौता तीन अरब डॉलर का है।

24 सितम्बर 2018 को रूस के उपप्रधानमंत्री और भारतीय विदेशी मंत्री सुषमा स्वराज ने 2025 तक द्विपक्षीय निवेश बढ़ाकर 20 विलियम डॉलर करने के लक्ष्य को दोहराया। इसका प्रमाण यह कि दोनों देशों में 2017 में द्विपक्षीय व्यापार 20 प्रतिशत से अधिक बढ़ा।

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया विशेषकर भारत–पाकिस्तान के परिप्रेक्ष्य में रूस की नीति में जो बदलाव परिलक्षित हो रहा है, उसे भारत को सन्तुलित करने की आवश्यकता है, ऐसा करके ही भारत इस क्षेत्र में अपने हितों की रक्षा कर सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिका और रूस में सन्तुलन स्थापित करके अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। यद्यपि शीतयुद्ध काल से लेकर सोवियत संघ के विघटन तक अमेरिका रूस का प्रतिद्वन्दी रहा है लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने चुनाव जीतने के बाद रूस के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया और कहा कि रूस के राष्ट्रपति पुतिन एक वैश्विक नेता है उससे मित्रता स्थापित करने की बात कही। वहीं जवाब में पुतिन ने वैश्विक मंच पर अमेरिका का साथ देने की बात की ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए यह बेहतर अवसर है कि दोनों महाशक्तियों से सम्बन्ध बेहतर कर न केवल दक्षिण एशिया, एशिया एवं वैश्विक राजनीति में सन्तुलन स्थापित कर अपनी भूमिका की सार्थकता को सिद्ध करें। यदि देखा जाय तो भारतीय विदेशनीति इस दिशा में जाती हुई दिखाई दे रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कुलदीप नैयर ''डिस्टैंट नेबर : एटेल ऑफ सबकांटिनेण्ट'' : विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1972*
2. *एस0एस0 खेरा, ''इण्डियाज डिफेन्स प्राब्लम'', ओरिएन्ट लौंगमेन्स 1947–65'', ई0वी0 पब्लिशिंग एण्ड डिस्ट्रीब्यूसिंग कं0 देहरादून, 1967*
3. *अर्थरस्टीन, इण्डिया एण्ड दि सोबियत यूनियन'' दि नेहरू एरा'' यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो, 1969*
4. *वि0ग्रे0वी0के0 नेगी, ''इण्डिया पाकिस्तान सबकांटीनेन्ट'', नेहा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2015*
5. *पूरन चन्द्रा, ''चाइना पाकिस्तान–इण्डिया ट्रैंगल एण्ड इण्डिया सिक्योरिटी चैलेंन्ज'' सुमित इण्टरप्राइजेज, नई दिल्ली, 2015*
6. *डॉ0 वी0के0वी0 सिंह, ''इण्डो पाक रिलेशन'' पेट्रागन प्रेस, नई दिल्ली, 2012*
7. *कर्नल (रिटायर्ड) एस0एन0 पायला, ''इण्डिया–रसिया चाइना ट्रिएंगल कैन थी'', न्यू वर्ल्ड आर्डर, सुमित इण्टरप्राइज, 2015*

जर्नल्स

8. *नरोत्तम गीन, ''सुपर पावर इनवाल्मेंट इन इण्डिया–पाकिस्तान रिलेशन'', इण्डिया क्वार्टर्ली, वाल्यूम, 46 नं0 4, अक्टूबर–दिसम्बर, 1990*
9. *जे0एम0 विनोद, चैंजिंग ग्लोबल सिनेरियो एण्ड इण्डो–पाक रिलेशन, मैनस्ट्रीम, 2 अगस्त, 1997*
10. *स्टीफेन, वी0 कोहन, ''यू0एस0 वीपन्स इन साउथ एशिया : ए पालिसी ऐनालिसिस फैशफिक अफेयर्स'', वाल्यूम, 49, नं0 स्प्रींग 1976*
11. *चिन्तामणि महापात्रा, ''पोखरण–II एण्ड एटर : डार्क क्लाउड ओवर (इण्डो–यू0एस0 रिलेसन्स'' स्ट्रेटजिक एनालिसिस, वाल्यूम 20, नं 1 अगस्त, 1998*